رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝٢

किसी वक़्त तमन्ना करेंगे कुफ्फार के काश वो मुसलमान होते।

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَ يَتَمَتَّعُوْا وَ يُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ

आप उन्हें छोड़ दीजिए के वो खाएं और मज़े उड़ाएं और उम्मीद ने उन्हें ग़ाफिल बना रखा है, फिर अनक़रीब

يَعْلَمُوْنَ ۝٣ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا

उन्हें मालूम हो जाएगा। और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया मगर इस हाल में के उस

كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۝٤ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا

के लिए मालूम तहरीर थी। कोई उम्मत अपने मुक़र्ररा वक़्त से न आगे जा सकती है

وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝٥ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ

और न पीछे रेह सकती हैं। और ये लोग केहते हैं के ऐ वो शख्स जिस पर ये ज़िक्र उतारा

الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۝٦ لَوْمَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ

गया, यक़ीनन तुम तो मजनून हो। तू हमारे पास फरिश्तों को क्यूं नहीं ले आता

اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٧ مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ

अगर तू सच्चा है। हम फरिश्तों को नहीं उतारते

اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۝٨ اِنَّا نَحْنُ

मगर हक़ के साथ और तब तो उन्हें मोहलत भी नहीं दी जाएगी। यक़ीनन हम ने ही

نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝٩ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا

ये ज़िक्र (कुरआन) उतारा है और हम ही उस की हिफाज़त करने वाले हैं। यक़ीनन हम ने आप

مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٠ وَمَا يَاْتِيْهِمْ

से पेहले रसूल भेजे पिछली उम्मतों में। और उन के पास कोई रसूल नहीं

مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١١ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ

आता था मगर वो उस के साथ इस्तिहज़ा करते थे। इसी तरह हम इस्तिहज़ा मुजरिमों के

فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٢ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ

दिलों में दाखिल करते हैं। के वो उस पर ईमान नहीं लाते और पिछले लोगों का

سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ

तरीक़ा गुज़र चुका है। और अगर हम उन पर आसमान का दरवाज़ा खोल दें,

فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ﴿١٤﴾ لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ

फिर वो उस में चढ़ भी जाएं, तब भी कहेंगे के हमारी निगाहें मदहोश

اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ ع ١٥

कर दी गईं, बल्के हम ऐसी क़ौम हैं के जिन पर जादू कर दिया गया है। हम ने

جَعَلْنَا فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٦﴾

ही आसमान में बुर्ज बनाए हैं और उसे देखने वालों के लिए मुज़य्यन किया है।

وَ حَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ

और हम ने उसे हर शैतान मरदूद से महफ़ूज़ बना दिया है। सिवाए उस के के जो चुपके से

السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا

सुन भागे तो एक चमकता हुवा अंगारा उस का पीछा करता है। और ज़मीन को हमीं ने फैलाया

وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِىَ وَ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَىْءٍ

और हम ने ही ज़मीन में पहाड़ डाल दिए और हम ने ही ज़मीन में हर चीज़ को एक मिक़दार के

مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾ وَ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ

साथ उगाया। और हम ने ही उस में ज़िन्दगी के असबाब रख दिए तुम्हारे लिए और उन के

لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا

लिए भी जिन्हें तुम रोज़ी नहीं देते। और कोई चीज़ नहीं है मगर हमारे पास

خَزَآئِنُهٗ ۫ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾ وَاَرْسَلْنَا

उस के खज़ाने हैं। और हम उसे सिर्फ मुक़र्ररा मिक़दार में उतारते हैं। और हम ने ही हवाएं

الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ

भेजीं जो पानी से भरी हुई होती हैं, फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं, फिर हम वो पानी तुम्हें पिलाते हैं,

وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْىٖ

इस हाल में के तुम पानी को खज़ाना कर के नहीं रख सकते। और हम ही ज़िन्दगी देते हैं

وَ نُمِيْتُ وَ نَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

और हम ही मौत देते हैं और हम बाक़ी रेहने वाले हैं। यक़ीनन हमें मालूम हैं

الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

तुम में से आगे बढ़ने वाले और यक़ीनन हमें मालूम हैं पीछे आने वाले।

ع ٢ وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ

यक़ीनन तेरा रब ही उन्हें इकट्ठा करेगा। यक़ीनन वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है। यक़ीनन

خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٦﴾

हम ने ही इन्सान को पैदा किया सड़े हुए गारे की खन खन बजने वाली मिट्टी से।

وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾

और जिन्नात को हम ने इन्तिहाई गर्म आग से उस से पेहले पैदा किया।

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌ ۢ بَشَرًا

और जब के तेरे रब ने फरिश्तों से कहा यक़ीनन मैं सड़े हुए गारे की

مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ

खन खन बजने वाली मिट्टी से इन्सान को पैदा करने वाला हूँ। फिर जब मैं उसे बना लूं और मैं

فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ

उस में अपनी रूह फूंक दूँ तो तुम उस के सामने सजदे में गिर जाना। फिर तमाम फरिश्तों ने सजदा

كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ

किया इकट्ठे, मगर इबलीस ने। इन्कार किया इस से के वो सजदा करने वालों

مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ يٰۤاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ

के साथ हो। अल्लाह ने पूछा ऐ इबलीस! तुझे क्या हुवा के तू सजदा करने वालों

مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ

के साथ नहीं हुवा? इबलीस ने कहा के मैं सजदा नहीं करूंगा ऐसे बशर को जिसे तू ने

مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٣٣﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا

पैदा किया है सड़े हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से। अल्लाह ने फरमाया फिर तू यहाँ से निकल जा,

فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَّاِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ

यक़ीनन तू मरदूद है। और तुझ पर लानत है क़यामत के दिन

الدِّيْنِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٣٦﴾

तक। इबलीस ने कहा ऐ मेरे रब! तू मुझे मोहलत दे उस दिन तक जिस दिन मुर्दे क़बरों से उठाए जाएंगे।

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ

अल्लाह ने फरमाया यक़ीनन तुझे मोहलत दी गई। मालूम वक्त के

الْمَعْلُوْمِ ﴿۳۸﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا اَغْوَيْتَنِيْ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ

दिन तक। इबलीस ने कहा ऐ मेरे रब! इस वजह से के तू ने मुझे गुमराह किया, मैं उन के लिए

فِي الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۳۹﴾ اِلَّا عِبَادَكَ

ज़मीन में ज़ीनतें क़ाइम करूंगा और मैं उन तमाम को गुमराह करूंगा। मगर उन में से तेरे

مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۴۰﴾ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ﴿۴۱﴾

खालिस किए हुए बन्दे। अल्लाह ने फरमाया के ये रास्ता मुझ तक सीधा आता है।

اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ

यक़ीनन मेरे बन्दे तेरा उन के ऊपर कोई ज़ोर नहीं चलेगा मगर वो जो

اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿۴۲﴾ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ

गुमराह लोगों में से तेरे पीछे चलें। और यक़ीनन उन तमाम के वादे की जगह

اَجْمَعِيْنَ ﴿۴۳﴾ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ

जहन्नम है। उस के सात दरवाज़े हैं। उन में से हर दरवाज़े के लिए एक

جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿۴۴﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿۴۵﴾ ع ۳

गिरोह तक़सीम किया जाएगा। यक़ीनन मुत्तक़ी लोग जन्नतों और चशमों में होंगे।

اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ﴿۴۶﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ

(कहा जाएगा के) तुम उन में सलामती के साथ अमन से दाखिल हो जाओ। और हम निकाल देंगे उस कीने को जो उन के

مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿۴۷﴾ لَا يَمَسُّهُمْ

सीनों में है, वो भाई भाई बन कर रहेंगे तख़्तों पर आमने सामने बैठे हुए होंगे। उन को उस में

فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ﴿۴۸﴾ نَبِّئْ عِبَادِيْٓ

न थकावट पहोंचेगी और न वो वहां से निकाले जाएंगे। आप मेरे बन्दों को खबर कर दीजिए

اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۴۹﴾ وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ

के यक़ीनन मैं बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला हूँ। और ये के मेरा अज़ाब वो दर्दनाक

الْاَلِيْمُ ﴿۵۰﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ﴿۵۱﴾ اِذْ دَخَلُوْا وقف لازم

अज़ाब है। और आप उन को इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मेहमानों की खबर दीजिए। जब वो दाखिल हुए

عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا

उन पर तो उन्हों ने कहा अस्सलामु अलैकुम। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन हम तुम से डरते हैं। उन्हों ने

لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ

कहा के आप न डरिए, यक़ीनन हम आप को एक इल्म वाले लड़के की बशारत देते हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾ قَالُوْا

क्या तुम मुझे बशारत देते हो इस हालत में के मुझे बुढ़ापा पहोंच चुका है, फिर तुम किस चीज की बशारत देते हो? उन्हों ने

بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ

कहा के हम आप को हक़ की बशारत देते हैं इस लिए आप मायूस लोगों में से न हों। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾ قَالَ

ने फरमाया सिवाए गुमराहों के और कौन अपने रब की रहमत से मायूस होता है? इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने पूछा

فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ

फिर तुम्हारे (ज़िम्मे) क्या काम (ड्यूटी) है, ऐ भेजे हुए फरिश्तो? उन्हों ने कहा के यक़ीनन हम एक

اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ

मुजरिम क़ौम की तरफ भेजे गए हैं, मगर लूत (अलैहिस्सलाम) के मानने वाले। यक़ीनन हम उन तमाम को नजात

اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۙ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ ع ٤

देंगे। मगर उन की बीवी के हम ने मुक़द्दर कर दिया है के वो हलाक होने वालों में से होगी।

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ

फिर जब लूत (अलैहिस्सलाम) के घर वालों के पास भेजे हुए फरिश्ते आए, तो लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम ऐसे लोग

مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ

हो जो अजनबी मालूम होते हो। उन्हों ने कहा बल्के हम आप के पास वो अज़ाब ले कर आए हैं जिस में ये

يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَ اَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾

शक करते थे। और हम आप के पास हक़ ले कर आए हैं और यक़ीनन हम सच्चे हैं।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ

इस लिए आप अपने मानने वालों को ले कर के सफर कर जाइए रात के किसी हिस्से में और आप उन के पीछे पीछे चलिए

وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾

और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर न देखे और तुम चलते रहो उस जगह तक जहां का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है।

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ

और हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) की तरफ उस हुक्म की वही कर दी के उन लोगों की जड़

مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ

सुब्ह होते हुए काट दी जाएगी। और शेहर वाले आए एक दूसरे को खुशखबरी

يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ

सुनाते हुए। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये मेरे मेहमान हैं,

فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا

इस लिए तुम मुझे रूस्वा मत करो। और अल्लाह से डरो और मुझे तुम बेआबरू न करो। उन्हों ने कहा

اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ

क्या हम ने आप को तमाम जहान वालों (की हिमायत) से रोका नहीं? लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये मेरी बेटियाँ हैं

فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾

अगर तुम्हें ऐसा करना ही है। आप की ज़िन्दगी की क़सम! यक़ीनन वो अपने नशे में मदहोश थे।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا

फिर सूरज निकलते हुए उन्हें एक चीख ने पकड़ लिया। फिर हम ने उस बस्ती के ऊपर वाले हिस्से को उस का नीचे वाला

سَافِلَهَا وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾

हिस्सा बना दिया और हम ने उन के ऊपर कंकर के पथ्थर बरसाए।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ

यक़ीनन उस में ग़ौर से देखने वालों के लिए निशानियाँ हैं। और यक़ीनन ये बस्ती ऐसे रास्ते पर है जो अभी

مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾

मौजूद है। यक़ीनन उस में ईमान वालों के लिए निशानी है।

وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا

और यक़ीनन ऐका वाले भी ज़ालिम थे। फिर हम ने उन से

مِنْهُمْ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ

इनतिक़ाम लिया। और यक़ीनन ये दोनों बस्तियाँ मारूफ रास्ते पर हैं। यक़ीनन हिज्र

اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا

वालों ने भी पैग़म्बर को झुठलाया। और हम ने उन्हें दीं अपनी निशानियाँ,

فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ

फिर वो उस से ऐराज़ करते थे। और वो पहाड़ों को

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿۸۲﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ

तराश कर अमन से घर बनाते थे। फिर उन्हें एक चीख ने पकड़ लिया

مُصْبِحِيْنَ ﴿۸۳﴾ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۴﴾

सुब्ह होते हुए। फिर उन के कुछ काम नहीं आए वो जो वो बनाते थे।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ

और हम ने आसमानों और ज़मीन और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं पैदा नहीं किया

اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ

मगर हक़ के साथ। और यक़ीनन क़यामत ज़रूर आने वाली है, इस लिए आप अच्छे तरीक़े से दरगुज़र

الْجَمِيْلَ ﴿۸۵﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۶﴾ وَلَقَدْ

कीजिए। यक़ीनन तेरा रब वही पैदा करने वाला, खूब जानने वाला है। यक़ीनन

اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿۸۷﴾

हम ने आप को सबअे मसानी और कुरआने अज़ीम दिया है।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ

आप अपनी निगाहें न उठाएं उस सामान की तरफ जिस के ज़रिए हम ने उन की चन्द क़िस्मों को मुतमत्तेअ कर रखा है

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۸﴾

और उन पर ग़म न कीजिए और अपना पेहलू ईमान वालों के सामने झुकाए रखिए।

وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿۸۹﴾ كَمَآ اَنْزَلْنَا

और आप फरमा दीजिए के मैं तो साफ साफ डराने वाला हूँ। जैसा हम ने उन तक़सीम

عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿۹۰﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿۹۱﴾

करने वालों पर (अज़ाब) उतारा। जो कुरआन को टुकड़े टुकड़े करते थे।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۲﴾ عَمَّا كَانُوْا

फिर आप के रब की क़सम! यक़ीनन हम उन तमाम से ज़रूर सवाल करेंगे। उन आमाल के मुतअल्लिक़ जो

يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ ع

वो करते थे। इस लिए आप साफ साफ बयान कर दीजिए वो जिस का आप को हुक्म दिया जा रहा है और मुशरिकीन

عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۹۴﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿۹۵﴾

से ऐराज़ कीजिए। यक़ीनन हम आप की तरफ से उन इस्तिहज़ा करने वालों के लिए काफी हैं।

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

उन के लिए जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद क़रार देते हैं। फिर उन्हें अनक़रीब मालूम हो जाएगा।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾

यक़ीनन हम जानते हैं के आप का सीना तंग होता है उन बातों की वजह से जो वो केहते हैं।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾

फिर आप अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए और सज्दा करने वालों में से रहिए।

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾ ع ٦ ٢٠ ٦

और अपने रब की इबादत कीजिए यहां तक के आप को मौत आ जाए।

اٰيَاتُهَا ١٢٨ (١٦) سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ (٧٠) رُكُوْعَاتُهَا ١٦

उस में १२८ आयतें हैं सूरह नहल मक्का में नाज़िल हुई और १६ रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَتٰٓى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى

अल्लाह का हुक्म आ पहोंचा, फिर तुम उस को जल्दी तलब मत करो। अल्लाह पाक है और बरतर है

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ

उन चीज़ों से जिसे वो शरीक ठेहराते हैं। वो फरिशते उतारता है वही के साथ अपने

اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا

हुक्म से जिस पर चाहता है अपने बन्दों में से, ये के तुम डराओ

اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿٢﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

के कोई माबूद नहीं मगर मैं ही, तो तुम मुझ से डरो। उस ने आसमानों और

وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣﴾ خَلَقَ

ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया। वो बरतर है उन चीज़ों से जिसे वो शरीक ठेहराते हैं। उस ने

الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤﴾

इन्सान को पैदा किया नुत्फे से, फिर अचानक वो खुला झगड़ालू बन गया।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ

और उस ने चौपाए पैदा किए। तुम्हारे लिए उन चौपाओं में गर्मी हासिल करने का सामान है और दूसरे मनाफ़ेअ भी

وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝۵ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ

हैं और उन में से बाज़ों को तुम खाते भी हो। और तुम्हारे लिए उन चौपाओं में खूबसूरती है जिस वक़्त के तुम शाम को

وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝۶ وَ تَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ

चरागाह से वापस लाते हो और जब के तुम जानवर चराने के लिए ले जाते हो। और ये जानवर तुम्हारे बोझ उठा ले

لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ

जाते हैं ऐसे इलाक़े तक के तुम वहाँ तक नहीं पहोंच सकते मगर जानों की मशक़्क़त से। यक़ीनन तुम्हारा रब

لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝۷ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ

अलबत्ता निहायत मेहरबान, बड़ा रहम वाला है। और (उस ने) घोड़े और खच्चर और गधे (पैदा किए)

لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ وَ يَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۸

ताके तुम उन पर सवारी करो और ज़ीनत (के लिए पैदा किए)। और पैदा करता है वो जो तुम नहीं जानते।

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَ مِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ

और अल्लाह ही के ज़िम्मे है दरमियानी रास्ता बयान करना और उन रास्तों में से कुछ टेढ़े हैं। और अगर वो चाहता

ع ۱ ۹ ۲ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝۹ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

तो तुम सब को हिदायत दे देता। वही अल्लाह है जिस ने आसमान से तुम्हारे लिए

مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝۱۰

पानी बरसाया, उस में से पीने के लिए है और उसी पानी से दरख़्त उगते हैं जिन में तुम जानवर चराते हो।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَ النَّخِيْلَ

वो तुम्हारे लिए उस पानी के ज़रिए उगाता है खेती और ज़ैतून और खजूर

وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

और अंगूर और तमाम फलों को। यक़ीनन उस में निशानी है

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝۱۱ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ

ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और उस ने तुम्हारे लिए रात और दिन को काम में लगा रखा है

وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ

और सूरज और चाँद को भी। और सितारे उस के हुक्म से काम में लगे हुए हैं।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝۱۲ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ

यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो अक़्ल रखती है। और जो चीज़ें उस ने तुम्हारे लिए

فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

ज़मीन में पैदा कीं जिन के रंग मुख़तलिफ़ हैं। यक़ीनन उस में निशानी है

لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ

ऐसी क़ौम के लिए जो नसीहत हासिल करती है। और वही अल्लाह है जिस ने समन्दर को काम में लगा रखा है

لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ

ताके तुम उस में से ताज़ा गोश्त खाओ और उस से ज़ेवर

حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ

निकालो जिसे तुम पेहनो। और तू कशतियों को देखेगा के उस में मौजें चीरती हुई चलती हैं

وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٤﴾ وَاَلْقٰى

और ताके अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और ताके तुम शुक्र अदा करो। और उस

فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا

ने ज़मीन में पहाड़ डाल दिए के कहीं वो तुम्हारी वजह से हिलने न लगे और उस ने नेहेर और रास्ते बनाए

لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ وَ عَلٰمٰتٍ ؕ وَ بِالنَّجْمِ هُمْ

ताके तुम राह पाओ। और अलामतें बनाईं। और सितारों से भी वो राह

يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ

पाते हैं। क्या फिर वो अल्लाह जो मख़लूक़ पैदा करता है उस की तरह हो सकता है जो पैदा नहीं कर सकता?

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ

क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते हो? और अगर तुम अल्लाह की नेअमत को गिनो तो तुम उस का इहसा नहीं कर सकते।

اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ

यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और अल्लाह जानता है उसे जो तुम छुपाते हो

وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और उसे जो तुम ज़ाहिर करते हो। और जिन को वो पुकारते हैं अल्लाह के अलावा

لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْوَاتٌ

वो कोई चीज़ पैदा नहीं कर सकते बल्के वो तो मख़लूक़ हैं। मुर्दे हैं,

غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ ع ٢

बेजान हैं। और उन्हें पता भी नहीं के किस वक्त मुर्दे क़ब्र से उठाए जाएंगे?

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

तुम्हारा माबूद यकता माबूद है। फिर जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ

उन के क़ुलूब मुन्किर हैं और वो बड़ाई चाहते हैं। यक़ीनन

اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ

अल्लाह जानता है उसे जो वो छुपाते हैं और जिसे वो ज़ाहिर करते हैं। यक़ीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ

तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करता। और जब उन से कहा जाता है

مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوْٓا

के तुम्हारे रब ने क्या उतारा तो केहते हैं के पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। ताके वो

اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ

अपने सारे गुनाह उठाएं क़यामत के दिन और उन लोगों के गुनाहों में से भी जिन्हें

يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾ ع ٣ ٩

ये इल्म के बग़ैर गुमराह कर रहे हैं। सुनो! बुरा है वो जिसे वो बोझ बना रहे हैं।

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ

यक़ीनन उन लोगों ने भी मक्र किया जो उन से पेहले थे, फिर अल्लाह (का हुक्म) उन की इमारत पर आया

مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ

बुन्यादों की जानिब से और उन पर छत गिर पड़ी उन के ऊपर से

وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ

और उन के पास अज़ाब आया जिधर से उन्हें खयाल भी नहीं था। फिर क़यामत

الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ

के दिन अल्लाह उन्हें रूस्वा करेगा और कहेगा के मेरे वो शुरका कहाँ हैं जिन के

كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

बारे में तुम झगड़ते थे? वो कहेंगे जिन्हें इल्म दिया गया है के

اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾

यक़ीनन आज रूस्वाई और बुराई काफिरों पर है।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠

उन पर जिन की फरिशते जान निकालते हैं इस हाल में के वो अपनी जानों पर जुल्म करने वाले होते हैं।

فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ

फिर वो सुलह को डालेंगे के हम तो कोई बुराई नहीं करते थे।

بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَادْخُلُوْٓا

क्यूं नहीं? यक़ीनन अल्लाह को खूब मालूम हैं वो अमल जो तुम करते थे। इस लिए

اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى

तुम जहन्नम के दरवाज़ों से उस में हमेशा रेहने के लिए दाखिल हो जाओ। फिर वो तकब्बुर करने वालों का

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ

बुरा ठिकाना है। और पूछा जाएगा उन से जो मुत्तक़ी हैं के तुम्हारे रब ने क्या

رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا

उतारा? तो वो कहेंगे के भलाई। उन के लिए जिन्हों ने इस दुन्या में नेकियाँ कीं

حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ

भलाई है। और अलबत्ता आखिरत का घर वो बेहतर है। और यक़ीनन मुत्तक़ियों का घर कितना

الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۰﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ

अच्छा है? वो जन्नाते अद्न हैं जिन में वो दाखिल होंगे, जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ

नेहरें बेहती होंगी, जिन में उन के लिए वो तमाम चीज़ें होंगी जो वो चाहेंगे। इसी तरह

يَجْزِى اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۱﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ

अल्लाह मुत्तक़ियों को बदला देंगे। उन को जिन की फरिशते जान निकालेंगे

طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ

पाकीज़ा होने की हालत में, वो कहेंगे 'अस्सलामु अलैकुम'। तुम जन्नत में दाखिल हो जाओ

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۲﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ

उन आमाल के बदले में जो तुम करते थे। वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर इस के के उन के पास

الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ

फरिशते आ जाएं या तेरे रब का (अज़ाब का) हुक्म आ जाए। इसी तरह उन लोगों

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ

ने भी किया जो उन से पेहले थे। और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन

وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ

वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। फिर उन्हें उन की बदअमली की सज़ाएं मिलीं

مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾ ع

जो उन्हों ने की और उन्हें उस अज़ाब ने घेर लिया जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ

और मुशरिकीन ने कहा के अगर अल्लाह चाहता तो हम अल्लाह के सिवा किसी चीज़ की इबादत

مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ

न करते, न हम और न हमारे बाप दादा, और न हम (उस के हुक्म) के बग़ैर कोई चीज़

مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ

हराम ठेहराते। इसी तरह उन लोगों ने भी किया जो उन से पेहले थे।

فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا

तो पैग़म्बरों के ज़िम्मे तो सिर्फ साफ साफ पहोंचा देना है। यक़ीनन हम

فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا

ने हर उम्मत में रसूल भेजे के तुम अल्लाह की इबादत करो और शैतान

الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ

से बचो। फिर उन में से बाज़ को अल्लाह ने हिदायत दी और उन में से बाज़ पर

حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

गुमराही साबित हो गई। तो तुम ज़मीन में चलो फिरो,

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾

फिर देखो के झुठलाने वालों का अन्जाम कैसा हुवा?

اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ

अगर आप उन की हिदायत पर हरीस हैं, तो यक़ीनन अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जिसे

يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ

अल्लाह गुमराह करता है और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा। और ये अपनी क़स्मों पर ज़ोर दे कर अल्लाह की

اَيۡمَانِهِمۡ ۙ لَا يَبۡعَثُ اللّٰهُ مَنۡ يَّمُوۡتُ ؕ بَلٰى وَعۡدًا
क़स्में खाते हैं के अल्लाह ज़िन्दा कर के नहीं उठाएगा उन्हें जो मर जाते हैं। क्यूं नहीं? अल्लाह के ज़िम्मे

عَلَيۡهِ حَقًّا وَّلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَۙ ﴿۳۸﴾
सच्चे वादे के तौर पर लाज़िम है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِىۡ يَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ وَلِيَعۡلَمَ الَّذِيۡنَ
(अल्लाह ज़िन्दा करेगा) ताके उन के सामने बयान करे वो जिस में वो इखतिलाफ करते थे और ताके काफिर लोग जान

كَفَرُوۡۤا اَنَّهُمۡ كَانُوۡا كٰذِبِيۡنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّمَا قَوۡلُنَا لِشَىۡءٍ
लें के यक़ीनन वो झूठे थे। हमारा तो किसी चीज़ को सिर्फ केहना होता है जब

اِذَاۤ اَرَدۡنٰهُ اَنۡ نَّقُوۡلَ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ﴿۴۰﴾ وَالَّذِيۡنَ ع ٥
हम उस का इरादा करते हैं के हम उस को केहते हैं के ‘كُنۡ’ (हो जा) तो वो हो जाती है। और वो लोग

هَاجَرُوۡا فِى اللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا ظُلِمُوۡا لَـنُبَوِّئَنَّهُمۡ
जिन्हों ने अल्लाह की वजह से हिजरत की इस के बाद के उन पर ज़ुल्म किया गया तो हम उन्हें

فِى الدُّنۡيَا حَسَنَةً ؕ وَلَاَجۡرُ الۡاٰخِرَةِ اَكۡبَرُ ۘ لَوۡ كَانُوۡا وقف لازم
दुन्या में अच्छा ठिकाना देंगे। और आखिरत का अज्र तो बहोत बड़ा है। काश के वो

يَعۡلَمُوۡنَۙ ﴿۴۱﴾ الَّذِيۡنَ صَبَرُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ ﴿۴۲﴾
जानते होते। वो जिन्हों ने सब्र किया और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ
और हम ने आप से पेहले रसूल नहीं भेजे मगर मर्द ही, जिन की तरफ हम वही भेजा करते थे,

فَسۡـئَلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَۙ ﴿۴۳﴾
तो तुम ज़िक्र वालों से पूछ लो अगर तुम जानते नहीं हो।

بِالۡبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ وَاَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ الذِّكۡرَ لِتُبَيِّنَ
(रसूल भेजे) मोअजिज़ात और किताबें दे कर। और हम ने आप की तरफ ये ज़िक्र (किताब) उतारा ताके आप

لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيۡهِمۡ وَلَعَلَّهُمۡ يَتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۴۴﴾ النصف
लोगों के सामने बयान करें वो जो उन की तरफ उतारा गया और शायद वो सोचें।

اَفَاَمِنَ الَّذِيۡنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنۡ يَّخۡسِفَ اللّٰهُ
क्या फिर वो जिन्हों ने बुरा मक्र किया वो मामून हैं इस से के अल्लाह उन्हें ज़मीन में

بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ
धंसा दे या उन पर अज़ाब ले आए जहां से उन्हें

لَا يَشْعُرُوْنَ۝٤٥ۙ اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ
गुमान भी न हो। या उन को पकड़ ले चलते फिरते, फिर वो (अल्लाह को)

بِمُعْجِزِيْنَ۝٤٦ۙ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمْ
आजिज़ नहीं कर सकते। या उन को डरा कर पकड़ ले। फिर यक़ीनन तेरा रब

لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ۝٤٧ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ
अलबत्ता शफ़क़त वाला, निहायत रहम वाला है। क्या उन्हों ने देखा नहीं अल्लाह की पैदा की हुई

مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا
चीज़ों को जिन के साए दाएं और बाएं ढलते हैं अल्लाह ही को सजदा

لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ۝٤٨ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
करते हुए और वो आजिज़ी करने वाले हैं। और अल्लाह ही को सजदा करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों

وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ۝٤٩
में हैं और जो ज़मीन में हैं जानदारों में से और फरिशते भी और वो तकब्बुर नहीं करते।

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ۝٥٠ ع السجدة
ع ١٢ ٦ ٣ वो अपने रब से डरते हैं अपने ऊपर से और करते हैं वही जिस का उन्हें हुक्म दिया जाता है।

وَ قَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ
और अल्लाह ने फरमाया के तुम दो माबूद मत बनाओ। वो तो सिर्फ यकता

وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ۝٥١ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
माबूद है। तो तुम मुझ ही से डरो। और उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों

وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ۝٥٢
और ज़मीन में हैं और उसी के लिए खालिस इबादत है। क्या अल्लाह के अलावा से तुम डरते हो?

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ
और जो नेअमत भी तुम्हारे पास है तो वो अल्लाह की तरफ से है, फिर जब तुम्हें ज़रर पहोंचता है

فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ۝٥٣ۚ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا
तो उसी की तरफ तुम आजिज़ी करते हो। फिर जब वो तुम से ज़रर दूर करता है तो अचानक

فَرِيۡقٌ مِّنۡكُمۡ بِرَبِّهِمۡ يُشۡرِكُوۡنَ ۙ﴿۵۴﴾ لِيَكۡفُرُوۡا

तुम में से एक जमाअत अपने रब के साथ शिर्क करने लगती है। ताके वो नाशुक्री करें उस (नेअमत) की

بِمَاۤ اٰتَيۡنٰهُمۡ ؕ فَتَمَتَّعُوۡا ۟ فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۵۵﴾ وَ يَجۡعَلُوۡنَ

जो हम ने उन्हें दी, तो मज़े उड़ा लो। फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा। और ये लोग हिस्सा मुक़र्रर करते हैं

لِمَا لَا يَعۡلَمُوۡنَ نَصِيۡبًا مِّمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسۡـَٔـلُنَّ

हमारी दी हुई रोज़ी में से उन बुतों के लिए जिन के बारे में उन्हें कुछ मालूम नहीं। अल्लाह की क़सम! ज़रूर तुम से

عَمَّا كُنۡتُمۡ تَفۡتَرُوۡنَ ﴿۵۶﴾ وَ يَجۡعَلُوۡنَ لِلّٰهِ الۡبَنٰتِ

सवाल होगा उस झूठ के मुतअल्लिक़ जो तुम घड़ते हो। और वो अल्लाह के लिए बेटियाँ क़रार देते हैं,

سُبۡحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمۡ مَّا يَشۡتَهُوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمۡ

अल्लाह इस से पाक है, और अपने लिए वो (लड़के) जिन की उन्हें चाहत है। हालांके जब उन में से किसी एक को

بِالۡاُنۡثٰى ظَلَّ وَجۡهُهٗ مُسۡوَدًّا وَّهُوَ كَظِيۡمٌ ۚ﴿۵۸﴾

बशारत दी जाती है लड़की की तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है और ग़म (व ग़ुस्से) से भर जाता है।

يَتَوَارٰى مِنَ الۡقَوۡمِ مِنۡ سُوۡٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمۡسِكُهٗ

वो छुपता (फिरता) है लोगों से उस की बुराई की वजह से जिस की बशारत उसे दी गई। अब आया उसे ज़िल्लत

عَلٰى هُوۡنٍ اَمۡ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ

के साथ रोके रखे या उस को मिट्टी में दबा दे। सुनो! बुरा है

مَا يَحۡكُمُوۡنَ ﴿۵۹﴾ لِلَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ

जिस का वो फैसला कर रहे हैं। उन लोगों की जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

مَثَلُ السَّوۡءِ ۚ وَلِلّٰهِ الۡمَثَلُ الۡاَعۡلٰى ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ

बुरी मिसाल है। और अल्लाह के लिए बरतर मिसाल है। और वो ज़बर्दस्त है,

الۡحَكِيۡمُ ﴿۶۰﴾ وَلَوۡ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلۡمِهِمۡ ع ١٣

हिक्मत वाला है। और अगर अल्लाह इन्सानों को पकड़ ले उन के ज़ुल्म की वजह से

مَّا تَرَكَ عَلَيۡهَا مِنۡ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنۡ يُّؤَخِّرُهُمۡ

तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़े, लेकिन अल्लाह उन्हें मोहलत देता है

اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمۡ لَا

एक वक़्ते मुक़र्ररा तक। फिर जब उन का वक़्ते मुक़र्ररा आ जाता है तो

يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ۝٦١ وَ يَجۡعَلُوۡنَ

एक घड़ी न पीछे रेह सकते हैं और न एक घड़ी आगे जा सकते हैं। और ये अल्लाह के

لِلّٰهِ مَا يَكۡرَهُوۡنَ وَ تَصِفُ اَلۡسِنَتُهُمُ الۡكَذِبَ

लिए वो मुक़र्रर करते हैं जिसे खुद नापसन्द करते हैं और उन की ज़बानें झूठ घड़ती हैं

اَنَّ لَهُمُ الۡحُسۡنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمۡ

के उन के लिए भलाई है। यक़ीनन उन के लिए दोज़ख है और यही

مُّفۡرَطُوۡنَ ۝٦٢ تَاللّٰهِ لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ

आगे आगे होंगे। अल्लाह की क़सम! यक़ीनन हम ने रसूल भेजे आप से पेहली उम्मतों की तरफ

فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيۡطٰنُ اَعۡمَالَهُمۡ فَهُوَ

फिर शैतान ने उन के लिए उन के अमल मुज़य्यन किए, फिर वो

وَلِيُّهُمُ الۡيَوۡمَ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝٦٣

आज उन का साथी है और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكَ الۡكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى

और हम ने आप पर ये किताब सिर्फ इस लिए उतारी है ताके आप उन के सामने साफ साफ बयान करें वो

اخۡتَلَفُوۡا فِيۡهِ ۙ وَهُدًى وَّ رَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ۝٦٤

जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं, और (ये किताब) ईमान लाने वाली क़ौम के लिए हिदायत और रहमत है।

وَاللّٰهُ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रिए ज़मीन को ज़िन्दा किया

بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ

उस के खुश्क हो जाने के बाद। यक़ीनन उस में निशानी है ऐसी क़ौम के लिए

يَّسۡمَعُوۡنَ ۝٦٥ ع وَاِنَّ لَكُمۡ فِى الۡاَنۡعَامِ لَعِبۡرَةً ؕ

जो सुनती है। और यक़ीनन तुम्हारे लिए चौपाओं में इबरत है।

نُسۡقِيۡكُمۡ مِّمَّا فِىۡ بُطُوۡنِهٖ مِنۡۢ بَيۡنِ فَرۡثٍ وَّدَمٍ

के हम तुम्हें पिलाते हैं उस से जो उन के पेटों में है गोबर और खून के दरमियान से

لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيۡنَ ۝٦٦ وَمِنۡ ثَمَرٰتِ

खालिस दूध, जो पीने वालों के लिए खुशगवार होता है। और खजूर और

النَّخِيۡلِ وَالۡاَعۡنَابِ تَتَّخِذُوۡنَ مِنۡهُ سَكَرًا

अंगूर के फलों से तुम नशाआवर चीज़ें बनाते हो

وَّرِزۡقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۷﴾

और अच्छी खाने की चीज़ें। यक़ीनन उस में निशानी है ऐसी क़ौम के लिए जो अक़्ल रखती हो।

وَاَوۡحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحۡلِ اَنِ اتَّخِذِىۡ

और तेरे रब ने शहद मक्खी को हुक्म दिया के तू पहाड़ों

مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعۡرِشُوۡنَ ﴿۶۸﴾

में घर बना और दरख्तों में और उन के छप्परों में।

ثُمَّ كُلِىۡ مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسۡلُكِىۡ سُبُلَ

फिर तू खा तमाम फलों से, फिर अपने रब के बनाए हुए

رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخۡرُجُ مِنۡۢ بُطُوۡنِهَا شَرَابٌ مُّخۡتَلِفٌ

रास्तों पर चल। उस के पेट से निकलती है ऐसी पीने की चीज़ जिस के रंग मुखतलिफ

اَلۡوَانُهٗ فِيۡهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

होते हैं, जिस में इन्सानों के लिए शिफा है। यक़ीनन उस में निशानी है

لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۶۹﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمۡ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمۡ ۙ

ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफात देगा।

وَمِنۡكُمۡ مَّنۡ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرۡذَلِ الۡعُمُرِ لِكَىۡ لَا يَعۡلَمَ

और तुम में कुछ वो हैं जो लौटाए जाते हैं निकम्मी उम्र तक ताके वो सब कुछ

بَعۡدَ عِلۡمٍ شَيۡـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ قَدِيۡرٌ ﴿۷۰﴾ ع ۱۵ ۹

जानने के बाद कुछ भी न जानें। यक़ीनन अल्लाह इल्म वाला, कुदरत वाला है।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعۡضَكُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ فِى الرِّزۡقِ ۚ

और अल्लाह ने तुम में से एक को दूसरे पर फज़ीलत दी रोज़ी में

فَمَا الَّذِيۡنَ فُضِّلُوۡا بِرَآدِّىۡ رِزۡقِهِمۡ عَلٰى

फिर जिन्हें फज़ीलत दी गई है वो अपनी रोज़ी नहीं देते अपने

مَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُهُمۡ فَهُمۡ فِيۡهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعۡمَةِ اللّٰهِ

गुलामों को इस तरह के ये आक़ा और वो गुलाम उस में बराबर हो जाएं। क्या फिर अल्लाह की नेअमत

يَجۡحَدُوۡنَ ﴿۷۱﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ

का वो इन्कार करते हैं? और अल्लाह ने तुम्हारी अपनी जानों से जोड़े

اَزۡوَاجًا وَّ جَعَلَ لَكُمۡ مِّنۡ اَزۡوَاجِكُمۡ بَنِيۡنَ

बनाए और तुम्हारी बीवियों से तुम्हें बेटे

وَ حَفَدَةً وَّ رَزَقَكُمۡ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالۡبَاطِلِ

और पोते दिए और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं। क्या फिर ये बातिल पर

يُؤۡمِنُوۡنَ وَ بِنِعۡمَتِ اللّٰهِ هُمۡ يَكۡفُرُوۡنَ ﴿۷۲﴾

ईमान रखते हैं और अल्लाह की नेअमत की नाशुक्री करते हैं?

وَ يَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمۡلِكُ لَهُمۡ رِزۡقًا

और इबादत करते हैं अल्लाह के अलावा ऐसी चीज़ों की जो उन को आसमानों

مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ شَيۡـًٔا وَّلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ ﴿۷۳﴾

और ज़मीन से कोई खाने की चीज़ देने पर क़ादिर नहीं हैं और न उस की ताक़त रखते हैं।

فَلَا تَضۡرِبُوۡا لِلّٰهِ الۡاَمۡثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ

इस लिए तुम अल्लाह के लिए मिसालें मत बयान करो। यक़ीनन अल्लाह जानता है

وَ اَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۷۴﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبۡدًا

और तुम जानते नहीं हो। अल्लाह ने एक मिसाल बयान की के एक वो

مَّمۡلُوۡكًا لَّا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّمَنۡ رَّزَقۡنٰهُ مِنَّا

ममलूक ग़ुलाम है जो किसी चीज़ पर कादिर नहीं है और एक वो है जिसे हम ने हमारी तरफ से अच्छी रोज़ी

رِزۡقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنۡفِقُ مِنۡهُ سِرًّا وَّ جَهۡرًا ؕ

दी है, फिर वो उस में से खर्च करता है चुपके से और अलानिया तौर पर।

هَلۡ يَسۡتَوٗنَ ؕ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ ؕ بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۷۵﴾

क्या ये दोनों बराबर हो सकते हैं? तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं। बल्के उन में अक्सर जानते नहीं।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيۡنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبۡكَمُ

और अल्लाह ने मिसाल बयान की दो आदमियों की जिन में से एक गूंगा है,

لَا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوۡلٰىهُ ۙ اَيۡنَمَا

किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं, बल्के वो बोझ है अपने आक़ा पर। जहां वो

يُوَجِّهۡهُّ لَا يَاۡتِ بِخَيۡرٍ ؕ هَلۡ يَسۡتَوِىۡ هُوَ ۙ وَمَنۡ

उसे भेजे तो कोई भलाई ले कर नहीं आता। तो क्या ये और वो शख़्स बराबर हो सकता है जो

يَّاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۷۶﴾ وَلِلّٰهِ ع ١٤

इन्साफ का हुक्म करता है और वो सीधे रास्ते पर है? और अल्लाह

غَيۡبُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَمَاۤ اَمۡرُ السَّاعَةِ

के लिए आसमानों और ज़मीन का ग़ैब है। और क़यामत का मुआमला नहीं है

اِلَّا كَلَمۡحِ الۡبَصَرِ اَوۡ هُوَ اَقۡرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ

मगर एक पलक झपकने की तरह, बल्के उस से भी ज़्यादा क़रीब। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत

قَدِيۡرٌ ﴿۷۷﴾ وَاللّٰهُ اَخۡرَجَكُمۡ مِّنۡۢ بُطُوۡنِ اُمَّهٰتِكُمۡ

वाला है। और अल्लाह ने तुम्हें निकाला तुम्हारी माओं के पेट से,

لَا تَعۡلَمُوۡنَ شَيۡـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَـكُمُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصَارَ

तुम कुछ भी जानते नहीं थे। और उस ने तुम्हारे लिए कान और आँख

وَالۡاَفۡـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۷۸﴾ اَلَمۡ يَرَوۡا

और दिल बनाए ताके तुम शुक्र अदा करो। क्या उन्हों ने देखा नहीं

اِلَى الطَّيۡرِ مُسَخَّرٰتٍ فِىۡ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمۡسِكُهُنَّ

परिन्दों को जो (अध्धर) लटके हुए होते हैं आसमानी फ़िज़ा में। उन को सिवाए अल्लाह के

اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۷۹﴾ وَاللّٰهُ

कोई रोके हुए नहीं है। यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान रखती है। और अल्लाह

جَعَلَ لَـكُمۡ مِّنۡۢ بُيُوۡتِكُمۡ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَـكُمۡ

ने तुम्हारे घरों में रेहने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए

مِّنۡ جُلُوۡدِ الۡاَنۡعَامِ بُيُوۡتًا تَسۡتَخِفُّوۡنَهَا يَوۡمَ

चौपाओं की खालों से घर बनाए जिन को तुम हलका समझते हो तुम्हारे सफ़र के

ظَعۡنِكُمۡ وَيَوۡمَ اِقَامَتِكُمۡ ۙ وَمِنۡ اَصۡوَافِهَا

वक़्त और तुम्हारी इक़ामत के दौरान। और उन के ऊन और उन के

وَاَوۡبَارِهَا وَاَشۡعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيۡنٍ ﴿۸۰﴾

बबरियों और उन के बालों से तुम सामान बनाते हो और एक वक़्त तक नफ़ा उठाने की चीज़ें बनाते हो।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمۡ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّ جَعَلَ لَكُمۡ

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी मख़लूक़ के साए बनाए और तुम्हारे लिए

مِّنَ الۡجِبَالِ اَكۡنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمۡ سَرَابِيۡلَ تَقِيۡكُمُ

पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए लिबास बनाया जो तुम्हें बचाता है

الۡحَرَّ وَ سَرَابِيۡلَ تَقِيۡكُمۡ بَاۡسَكُمۡ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ

गर्मी से और लिबास बनाया जो तुम्हें तुम्हारी लड़ाई में बचाता है। इसी तरह अल्लाह अपनी

نِعۡمَتَهٗ عَلَيۡكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تُسۡلِمُوۡنَ ﴿۸۱﴾ فَاِنۡ تَوَلَّوۡا

नेअमतें तुम पर इतमाम तक पहोंचाते हैं ताके तुम ताबेदार हो जाओ। फिर अगर वो ऐराज़ करें

فَاِنَّمَا عَلَيۡكَ الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿۸۲﴾ يَعۡرِفُوۡنَ نِعۡمَتَ

तो आप के ज़िम्मे सिर्फ साफ साफ पहोंचा देना है। वो अल्लाह की नेअमत को

اللّٰهِ ثُمَّ يُنۡكِرُوۡنَهَا وَاَكۡثَرُهُمُ الۡكٰفِرُوۡنَ ﴿۸۳﴾ وَ يَوۡمَ ع ۱۷

पेहचानते हैं, फिर उस का इन्कार करते हैं और उन में से अक्सर नाशुकरे हैं। और जिस दिन

نَبۡعَثُ مِنۡ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيۡدًا ثُمَّ لَا يُؤۡذَنُ لِلَّذِيۡنَ

हम हर उम्मत में से एक गवाह को उठाएंगे, फिर काफिरों को इजाज़त नहीं दी

كَفَرُوۡا وَلَا هُمۡ يُسۡتَعۡتَبُوۡنَ ﴿۸۴﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوا

जाएगी और न उन से मुआफी मांगने को कहा जाएगा। और जब ज़ालिम अज़ाब

الۡعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمۡ وَلَا هُمۡ يُنۡظَرُوۡنَ ﴿۸۵﴾

देखेंगे तो उन से हलका नहीं किया जाएगा और न उन को मोहलत दी जाएगी।

وَاِذَا رَاَ الَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡا شُرَكَآءَهُمۡ قَالُوۡا رَبَّنَا

और जब मुशरिकीन अपने शुरका को देखेंगे तो कहेंगे ऐ हमारे रब!

هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيۡنَ كُنَّا نَدۡعُوۡا مِنۡ دُوۡنِكَ ۚ

ये हमारे शुरका हैं जिन को हम तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे।

فَاَلۡقَوۡا اِلَيۡهِمُ الۡقَوۡلَ اِنَّكُمۡ لَكٰذِبُوۡنَ ﴿۸۶﴾ وَاَلۡقَوۡا

तो वो उन की तरफ बात को डालेंगे के तुम झूठ बोलते हो। और वो

اِلَى اللّٰهِ يَوۡمَئِذِ ِۨالسَّلَمَ وَضَلَّ عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا

अल्लाह की तरफ उस दिन सुलह को डालेंगे और उन से खो जाएंगे वो जिसे वो

يَفْتَرُوْنَ ﴿۸۴﴾ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ

घड़ा करते थे। वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से

اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا

रोका उन को हम एक से बढ़ कर एक अज़ाब देंगे इस वजह से के वो फसाद

يُفْسِدُوْنَ ﴿۸۸﴾ وَ يَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا

फेलाते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गवाह उन के

عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا

खिलाफ उन्ही में से खड़ा करेंगे, फिर हम आप को उन तमाम पर गवाह के तौर पर

عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ

लाएंगे। और हम ने आप पर ये किताब उतारी हर चीज़ के बयान

شَيْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً وَّ بُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿۸۹﴾ ع ۱۲

के लिए और मुसलमानों के लिए हिदायत और रहमत और बशारत के तौर पर।

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي

यक़ीनन अल्लाह हुक्म देते हैं इन्साफ का और नेकी का और रिश्तेदारों को

الْقُرْبٰى وَ يَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ

देने का और मना फरमाते हैं बेहयाई से और बुराई से और ज़ुल्म से।

يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۹۰﴾ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ

वो तुम्हें नसीहत करता है ताके तुम नसीहत हासिल करो। और तुम अल्लाह का अहद पूरा करो

اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا

जब तुम आपस में मुआहदा करो और तुम क़स्मों को उन के पक्का करने के बाद मत तोड़ो

وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ

इस हाल में के तुम ने अल्लाह को अपने ऊपर कफील बना लिया है। यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे

مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا

अफआल जानता है। और तुम उस औरत की तरह मत बनो जिस ने मेहनत कर के

مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا ۢ

अपना काता हुवा सूत टुकड़े टुकड़े कर के तोड़ डाला, के तुम अपनी क़स्मों को आपस में दखल देने का

بَيۡنَكُمۡ اَنۡ تَكُوۡنَ اُمَّةٌ هِىَ اَرۡبٰى مِنۡ اُمَّةٍ ؕ

ज़रिया बनाओ ताके एक जमाअत दूसरी जमाअत से बढ़ जाए।

اِنَّمَا يَبۡلُوۡكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَ لَيُبَيِّنَنَّ لَكُمۡ يَوۡمَ

अल्लाह तो इस के ज़रिए तुम्हें आज़माते हैं। और अल्लाह तुम्हारे सामने क़यामत के

الۡقِيٰمَةِ مَا كُنۡتُمۡ فِيۡهِ تَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۹۲﴾ وَلَوۡ شَآءَ اللّٰهُ

दिन उस को बयान करेंगे जिस में तुम इखतिलाफ करते थे। और अगर अल्लाह चाहता

لَجَعَلَكُمۡ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنۡ يُّضِلُّ مَنۡ يَّشَآءُ

तो तुम्हें एक उम्मत बना देता लेकिन अल्लाह गुमराह करते हैं जिसे चाहते हैं

وَيَهۡدِىۡ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَ لَتُسۡـَٔـلُنَّ عَمَّا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۹۳﴾

और हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं। और तुम से तुम्हारे आमाल का ज़रूर सवाल होगा।

وَلَا تَتَّخِذُوۡۤا اَيۡمَانَكُمۡ دَخَلًا ۢ بَيۡنَكُمۡ فَتَزِلَّ قَدَمٌ

और तुम अपनी क़स्मों को आपस में दखल देने का ज़रिया मत बनाओ, वरना क़दम फिसल जाएगा

بَعۡدَ ثُبُوۡتِهَا وَ تَذُوۡقُوا السُّوۡٓءَ بِمَا صَدَدۡتُّمۡ

उस के जमने के बाद और तुम सज़ा चखोगे इस वजह से के तुम ने अल्लाह के

عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ۚ وَ لَـكُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿۹۴﴾ وَلَا تَشۡتَرُوۡا

रास्ते से रोका। और तुम्हारे लिए भारी अज़ाब होगा। और तुम अल्लाह के अहद के

بِعَهۡدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيۡلًا ؕ اِنَّمَا عِنۡدَ اللّٰهِ هُوَ خَيۡرٌ

इवज़ मामूली सा फाइदा मत खरीदो। जो अल्लाह के पास है वही तुम्हारे लिए बेहतर

لَّـكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۹۵﴾ مَا عِنۡدَكُمۡ يَنۡفَدُ

है अगर तुम जानते हो। जो तुम्हारे पास है वो खत्म हो जाएगा

وَمَا عِنۡدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَ لَنَجۡزِيَنَّ الَّذِيۡنَ صَبَرُوۡۤا

और जो अल्लाह के पास है वो बाक़ी रेहने वाला है। और हम ज़रूर बदला देंगे सब्र करने वालों को

اَجۡرَهُمۡ بِاَحۡسَنِ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۹۶﴾ مَنۡ عَمِلَ

उन का सवाब, उन अच्छे आमाल का जो वो करते थे। जो आमाले सालिहा

صَالِحًا مِّنۡ ذَكَرٍ اَوۡ اُنۡثٰى وَهُوَ مُؤۡمِنٌ فَلَنُحۡيِيَنَّهٗ

करेगा मर्दों में से हो या औरतों में से बशर्तेके वो मोमिन हो, तो हम उसे

حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَ لَنَجۡزِيَنَّهُمۡ اَجۡرَهُمۡ بِاَحۡسَنِ

उम्दा ज़िन्दगी देंगे। और हम ज़रूर उन्हें उन का सवाब देंगे, उन अच्छे

مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۹۷﴾ فَاِذَا قَرَاۡتَ الۡقُرۡاٰنَ فَاسۡتَعِذۡ

आमाल का जो वो करते थे। फिर जब तुम कुरआन पढ़ो तो

بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ﴿۹۸﴾ اِنَّهٗ لَيۡسَ لَهٗ

अल्लाह की शैतान मरदूद से पनाह मांगो। यक़ीनन उस का ज़ोर

سُلۡطٰنٌ عَلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ ﴿۹۹﴾

उन पर नहीं है जो ईमान लाते हैं और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।

اِنَّمَا سُلۡطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيۡنَ يَتَوَلَّوۡنَهٗ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ

उस का ज़ोर तो सिर्फ उन पर होता है जो उस से दोस्ती रखते हैं और जो

بِهٖ مُشۡرِكُوۡنَ ﴿۱۰۰﴾ ع وَاِذَا بَدَّلۡنَاۤ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ ع ۱۴

अल्लाह के साथ शरीक ठेहराते हैं। और जब हम एक आयत के बदले दूसरी आयत लाते हैं,

وَّاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مُفۡتَرٍ ؕ

और अल्लाह खूब जानता है उसे जिसे वो उतारता है, तो ये कुफ्फार केहते हैं के आप तो सिर्फ झूठ घड़ते हैं।

بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۰۱﴾ قُلۡ نَزَّلَهٗ رُوۡحُ

बल्के उन में से अक्सर जानते नहीं। आप फरमा दीजिए के उस को रूहुल कुदुस

الۡقُدُسِ مِنۡ رَّبِّكَ بِالۡحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

ने तेरे रब की तरफ से हक़ के साथ उतारा है ताके वो ईमान वालों को मज़बूत करे

وَ هُدًى وَّ بُشۡرٰى لِلۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿۱۰۲﴾ وَلَقَدۡ نَعۡلَمُ

और हिदायत और बशारत बने मानने वालों के लिए। यक़ीनन हम जानते हैं

اَنَّهُمۡ يَقُوۡلُوۡنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِىۡ

के ये कुफ्फार केहते हैं के इस नबी को तो एक इन्सान सिखा रहा है। उस शख्स की ज़बान जिस की

يُلۡحِدُوۡنَ اِلَيۡهِ اَعۡجَمِىٌّ وَّ هٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ

तरफ ये मन्सूब करते हैं अजमी है और ये कुरआन तो साफ अरबी ज़बान

مُّبِيۡنٌ ﴿۱۰۳﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ

वाला है। यक़ीनन वो लोग जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते

لَا يَهۡدِيۡهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۰۴﴾

अल्लाह उन को हिदायत नहीं देंगे और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।

اِنَّمَا يَفۡتَرِى الۡكَذِبَ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ

झूठ वही लोग घड़ते हैं जो अल्लाह की आयात पर

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡكٰذِبُوۡنَ ﴿۱۰۵﴾

ईमान नहीं रखाते। और यही लोग झूठे हैं।

مَنۡ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ اِيۡمَانِهٖۤ اِلَّا مَنۡ اُكۡرِهَ

जो अल्लाह के साथ कुफ्र करे ईमान लाने के बाद मगर जो मजबूर किया जाए

وَ قَلۡبُهٗ مُطۡمَئِنٌّۢ بِالۡاِيۡمَانِ وَلٰكِنۡ مَّنۡ شَرَحَ

इस हाल में के उस का दिल मुतमइन हो ईमान पर, लेकिन वो जिसे

بِالۡكُفۡرِ صَدۡرًا فَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمۡ

कुफ्र का शर्हे सद्र हो, तो उन पर अल्लाह की तरफ से गज़ब होगा। और उन के लिए

عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿۱۰۶﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسۡتَحَبُّوا الۡحَيٰوةَ

भारी अज़ाब होगा। ये इस वजह से के उन्हों ने दुन्यवी ज़िन्दगी को आखिरत

الدُّنۡيَا عَلَى الۡاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ

के मुक़ाबले में पसन्द किया, और ये के अल्लाह काफिर क़ौम को हिदायत

الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۱۰۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ طَبَعَ اللّٰهُ

नहीं देते। उन के दिलों और उन के कानों और

عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ وَ سَمۡعِهِمۡ وَ اَبۡصَارِهِمۡ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ

उन की आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है। और यही लोग

الۡغٰفِلُوۡنَ ﴿۱۰۸﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ هُمُ

ग़ाफिल हैं। बिलाशुबा यही लोग आखिरत में खसारे

الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۱۰۹﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيۡنَ هَاجَرُوۡا

वाले हैं। फिर यक़ीनन तेरा रब उन के लिए जिन्हों ने हिजरत की

مِنۡۢ بَعۡدِ مَا فُتِنُوۡا ثُمَّ جٰهَدُوۡا وَصَبَرُوۡۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنۡۢ

मसाइब झेलने के बाद, फिर जिहाद करते रहे और साबिर रहे, तो यक़ीनन तेरा रब इस

بَعۡدِهَا لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۱۰﴾ يَوۡمَ تَاۡتِىۡ كُلُّ ع ١٤

के बाद बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। जिस दिन हर शख़्स आएगा

نَفۡسٍ تُجَادِلُ عَنۡ نَّفۡسِهَا وَ تُوَفّٰى كُلُّ نَفۡسٍ

झगड़ा करते हुए अपनी ज़ात की तरफ से और हर शख़्स को पूरे पूरे दिए जाएंगे

مَّا عَمِلَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ

वो अमल जो उस ने किए और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। और अल्लाह ने मिसाल

مَثَلًا قَرۡيَةً كَانَتۡ اٰمِنَةً مُّطۡمَئِنَّةً يَّاۡتِيۡهَا

बयान की एक बस्ती की जो अमन वाली थी, इतमिनान वाली थी, उस की रोज़ी

رِزۡقُهَا رَغَدًا مِّنۡ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتۡ بِاَنۡعُمِ

फरावानी के साथ आती थी हर तरफ से, फिर उस ने कुफ्र किया अल्लाह की नेअमतों

اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الۡجُوۡعِ وَالۡخَوۡفِ

के साथ, तो अल्लाह ने उसे भूक और खौफ के लिबास का मज़ा चखाया

بِمَا كَانُوۡا يَصۡنَعُوۡنَ ﴿۱۱۲﴾ وَلَقَدۡ جَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡهُمۡ

उन आमाल की वजह से जो वो करते थे। यक़ीनन उन के पास उन्ही में से एक पैग़म्बर आए,

فَكَذَّبُوۡهُ فَاَخَذَهُمُ الۡعَذَابُ وَهُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿۱۱۳﴾

फिर उन्हों ने उन्हें झुठलाया, फिर उन को अज़ाब ने पकड़ लिया इस हाल में के वो ज़ालिम थे।

فَكُلُوۡا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشۡكُرُوۡا

तो खाओ उन चीज़ों में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दी हैं हलाल पाकीज़ा को। और अल्लाह की

نِعۡمَتَ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ اِيَّاهُ تَعۡبُدُوۡنَ ﴿۱۱۴﴾ اِنَّمَا

नेअमत का शुक्र अदा करो अगर तुम उसी की इबादत करते हो। उस ने

حَرَّمَ عَلَيۡكُمُ الۡمَيۡتَةَ وَالدَّمَ وَ لَحۡمَ الۡخِنۡزِيۡرِ

तुम पर सिर्फ मुर्दार और खून और खिन्ज़ीर का गोश्त हराम किया है और वो जानवर जिन पर अल्लाह

وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَيۡرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضۡطُرَّ غَيۡرَ بَاغٍ

के अलावा का नाम लिया गया हो। फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए इस हाल में के वो लज़्ज़त को तलाश करने वाला

وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۱۵﴾ وَلَا تَقُوۡلُوۡا

न हो और जान बचाने की मिक़दार से ज़्यादा खाने वाला न हो, तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और

لِمَا تَصِفُ اَلۡسِنَتُكُمُ الۡكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ

तुम्हारी ज़बानों की किज़्बबयानी की बिना पर ये मत कहो के ये हलाल है

وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفۡتَرُوۡا عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ ؕ

और ये हराम है ताके तुम अल्लाह पर झूठ घड़ो।

اِنَّ الَّذِيۡنَ يَفۡتَرُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ

यक़ीनन जो अल्लाह पर झूठ घड़ते हैं

لَا يُفۡلِحُوۡنَ ۝۱۱۶ مَتَاعٌ قَلِيۡلٌ ۖ وَّلَهُمۡ عَذَابٌ

वो फलाह नहीं पाएंगे। थोड़ा नफा उठाना है। और उन के लिए दर्दनाक

اَلِيۡمٌ ۝۱۱۷ وَعَلَى الَّذِيۡنَ هَادُوۡا حَرَّمۡنَا

अज़ाब है। और यहूदियों पर हम ने हराम की वो चीज़ें

مَا قَصَصۡنَا عَلَيۡكَ مِنۡ قَبۡلُ ۚ وَمَا ظَلَمۡنٰهُمۡ

जो हम ने इस से पेहले आप के सामने बयान की हैं। और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया

وَلٰكِنۡ كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ۝۱۱۸ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ

लेकिन वो अपनी जानों पर जुल्म करते थे। फिर तेरा रब

لِلَّذِيۡنَ عَمِلُوا السُّوۡٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوۡا

उन के लिए जिन्हों ने बुरे अमल किए नावाक़िफीयत से, फिर उस के बाद

مِنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ وَ اَصۡلَحُوۡۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنۡۢ بَعۡدِهَا

तौबा कर ली और इस्लाह कर ली, तो यक़ीनन तेरा रब इस के बाद अलबत्ता

لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝۱۱۹ ع اِنَّ اِبۡرٰهِيۡمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا ۱۵ ۲۱

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। यक़ीनन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) वो एक उम्मत थे, अल्लाह के सामने आजिज़ी

لِّلّٰهِ حَنِيۡفًا ؕ وَلَمۡ يَكُ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ۝۱۲۰ۙ شَاكِرًا

करने वाले थे, सिर्फ अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे। अल्लाह की नेअमतों

لِّاَنۡعُمِهٖ ؕ اِجۡتَبٰىهُ وَ هَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ۝۱۲۱

का शुक्र अदा करने वाले थे। उन को अल्लाह ने मुन्तखब किया था और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत दी थी।

وَاٰتَيۡنٰهُ فِى الدُّنۡيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِى الۡاٰخِرَةِ

और हम ने उन्हें दुन्या में भलाई अता की थी। और यक़ीनन वो आखिरत में

لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۲۲﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ

सुलहा में से हैं। फिर हम ने आप की तरफ वही की के आप इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत का इत्तिबा

مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

कीजिए, जो सिर्फ अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे।

اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ

सनीचर तो उन पर मुक़र्रर किया गया था जिन्हों ने उस के बारे में इखतिलाफ किया था।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

और यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ

उस में जिस में वो इखतिलाफ करते थे। आप अपने रब के रास्ते की तरफ दावत दीजिए

بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ

हिक्मत के ज़रिए और अच्छी नसीहत से और उन से बहस कीजिए उस तरीक़े से

هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

जो बेहतर हो। आप का रब वो खूब जानता है उस शख्स को जो अल्लाह के रास्ते से भटक गया

عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ

और वो हिदायत पाने वालों को खूब जानता है। और अगर तुम बदला लो

فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ

तो उतना ही लो जितनी तुम्हें तकलीफ दी जाए। और अगर तुम सब्र करो

لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ

तो अलबत्ता सब्र करने वालों के लिए ये सब्र बेहतर है। और आप सब्र कीजिए और आप का सब्र

اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ

सिर्फ अल्लाह की तौफीक़ ही से है और उन पर ग़म न कीजिए और आप उन के मक्र की वजह से

مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا

तंगदिल न हों। यक़ीनन अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है

وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ ع ۱۶ ۹ ۲۲

और उन के साथ है जो नेकी करने वाले हैं।